International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA)
Multidisciplinary Peer-Reviewed Online Open Access Journal Impact Factor: 5.8
Volume 5, Issue 1, Jan-Mar 2025 ID: IJCRTA0000160 ISSN: 2583-1801
Email: ijcrta@gmail.com Website: www.ijcrta.org

भारतीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता की भूमिका

कृष्ण कुमार सिंह

Author Affiliation:
एस.पी.ए., आईजेएनटीयू, अमरकंटक (मप्र)
Email: kksinghigntu@gmail.com

Citation of Article: कृष्ण, कुमार सिंह. (2025). भारतीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता की भूमिका. International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA) ISSN: 2583-1801, 5 (1), pg. 13-16. ijcrta.org

सारांश:

सूचना साक्षरता (Information Literacy) आज के युग में एक आवश्यक कौशल बन गया है, विशेष रूप से जब सूचना की उपलब्धता और विविधता तेजी से बढ़ रही है। भारतीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता की भूमिका बहुआयामी है, जो न केवल ज्ञान के प्रसार में सहायक है, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के सशक्तिकरण में भी योगदान देती है। यह शोध पत्र भारतीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता की आवश्यकता, उसकी वर्तमान स्थिति, लाभ, चुनौतियाँ और इसे प्रभावी ढंग से लागू करने की रणनीतियों पर केंद्रित है।

परिचय:

अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन (ALA) के अनुसार, सूचना साक्षरता (Information Literacy) को "इस आवश्यकता को पहचानने और आवश्यक जानकारी को ढूंढने, मूल्यांकन करने और प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया गया है। सूचना संसाधनों के बढ़ते डिजिटलीकरण के साथ, सूचना साक्षरता व्यक्तिगत, शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास के लिए अनिवार्य हो गई है। भारत में शैक्षणिक से लेकर सार्वजनिक संस्थानों तक की लाइब्रेरी, सूचना साक्षरता कौशल प्रदान करने के लिए विशेष रूप से सक्षम हैं और तेजी से विकासशील देश में ज्ञान के अंतर को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

सूचना साक्षरता की आवश्यकता:

सूचना साक्षरता उपयोगकर्ताओं को सही, प्रामाणिक और प्रासंगिक जानकारी तक पहुँचने और उसका उपयोग करने की क्षमता प्रदान करती है। डिजिटल युग में, जब इंटरनेट पर सूचनाओं की बाढ़ आ चुकी है, यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया है कि उपयोगकर्ता सही जानकारी का चयन कर सकें। पुस्तकालय, जो हमेशा से ज्ञान और शिक्षा के केंद्र रहे हैं, सूचना साक्षरता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे उपयोगकर्ताओं को केवल किताबें उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्हें सूचना खोजने, उसका मूल्यांकन करने और उसे प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

भारतीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता की वर्तमान स्थिति:

भारत में सूचना साक्षरता का प्रसार धीरे-धीरे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय और कॉलेज पुस्तकालय, विशेष रूप से, इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने सूचना साक्षरता को अपने पाठ्यक्रम का हिस्सा बना लिया है। इसके अलावा, सार्वजनिक और विद्यालय पुस्तकालय भी इस दिशा में कदम उठा रहे हैं। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों में अभी भी इसकी पहुँच सीमित है। डिजिटल विभाजन और संसाधनों की कमी जैसे मुद्दे इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करते हैं।

सूचना साक्षरता के लाभ:

सूचना साक्षरता समाज और व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव डालती है। यह ज्ञान तक पहुँच, शैक्षिक और व्यावसायिक विकास, समाज के सशक्तिकरण और जीवन भर सीखने की आदत को बढ़ावा देती है। उदाहरण के तौर पर:

1. **ज्ञान तक समान पहुंच**: सूचना साक्षरता सभी उपयोगकर्ताओं को समान रूप से जानकारी तक पहुँचने का अधिकार प्रदान करती है। यह समाज में ज्ञान के असमान वितरण को कम करने में मदद करती है।
2. **शैक्षिक और व्यावसायिक विकास**: सूचना साक्षरता छात्रों को उनके शैक्षणिक और पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक है। उदाहरण के लिए, एक शोध छात्र सही स्रोतों से प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करके उच्च गुणवत्ता के शोध पत्र लिख सकता है।
3. **समाज का सशक्तिकरण**: सूचनाओं तक पहुँच नागरिकों को बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। जैसे, किसानों को कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए नई तकनीकों की जानकारी मिल सकती है।
4. **जीवन भर सीखने की आदत**: सूचना साक्षरता व्यक्तियों को निरंतर सीखने के लिए प्रेरित करती है। जैसे, एक पेशेवर नई तकनीकी कौशल सीखकर अपने करियर को बढ़ावा दे सकता है।

सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को लागू करने की चुनौतियाँ:

सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को लागू करना भारतीय पुस्तकालयों के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

1. **संसाधनों की कमी**: अधिकांश पुस्तकालयों में आवश्यक वित्तीय, तकनीकी और मानव संसाधनों की कमी है।
2. **डिजिटल विभाजन**: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में बड़ा अंतर है।
3. **भाषा संबंधी बाधाएँ**: भारत की भाषाई विविधता सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को लागू करने में चुनौती उत्पन्न करती है।
4. **पुस्तकालय कर्मियों का प्रशिक्षण**: पुस्तकालय कर्मियों में तकनीकी और सूचना साक्षरता कौशल की कमी भी एक बड़ी समस्या है।

अंततः, इन चुनौतियों को संबोधित करने के लिए सरकारी नीति, संस्थागत समर्थन, और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है। इस दिशा में अधिक शोध और अभिनव दृष्टिकोण अपनाकर सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को सफल बनाया जा सकता है।

सूचना साक्षरता को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ:

सूचना साक्षरता (Information Literacy) आज के डिजिटल युग में व्यक्तियों के व्यक्तिगत, शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल जानकारी खोजने की क्षमता नहीं है, बल्कि इसे मूल्यांकन

और प्रभावी ढंग से उपयोग करने की दक्षता भी है। भारत जैसे विविधता वाले देश में, जहां ज्ञान और डिजिटल संसाधनों तक पहुंच असमान है, सूचना साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है।

1. डिजिटल बुनियादी ढांचे का विकास: सूचना साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए सबसे पहला कदम डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करना है। ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और कंप्यूटर सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए सरकारी योजनाओं जैसे 'डिजिटल इंडिया' को सुदृढ़ करने और निजी क्षेत्र के सहयोग से तकनीकी संसाधनों की पहुंच बढ़ाने की आवश्यकता है।

2. शैक्षणिक पाठ्यक्रम में सूचना साक्षरता को शामिल करना: स्कूल और कॉलेज स्तर पर सूचना साक्षरता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। छात्रों को सिखाया जाना चाहिए कि वे सूचनाओं को कैसे ढूंढें, उनकी सत्यता का मूल्यांकन करें और उनका उपयोग करें। शिक्षकों को सूचना साक्षरता के महत्व को समझने और इसे पढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

3. ग्रंथालय सेवाओं को मजबूत करना: पुस्तकालय सूचना साक्षरता के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

- **डिजिटल पुस्तकालयों का निर्माण**: सभी शैक्षणिक और सार्वजनिक पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों को शामिल किया जाना चाहिए।
- **पुस्तकालय कार्यशालाएँ**: नियमित रूप से सूचना साक्षरता पर कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए, जहां लोग इंटरनेट पर जानकारी खोजने, इसे प्रामाणिकता के लिए जाँचने, और डेटा गोपनीयता के महत्व को समझ सकें।

4. सार्वजनिक जागरूकता अभियान: सूचना साक्षरता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाए जाने चाहिए।

- **सोशल मीडिया का उपयोग**: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सूचना साक्षरता के लाभों और कौशल सिखाने वाले वीडियो, पोस्ट और इन्फोग्राफिक्स साझा किए जा सकते हैं।
- **स्थानीय समुदायों में कार्यक्रम**: स्थानीय भाषाओं में समुदाय आधारित प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाने चाहिए।

5. सरकारी और निजी क्षेत्र का सहयोग: सरकार और निजी संगठनों को सूचना साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

- **नीति निर्माण और फंडिंग**: सरकार को पुस्तकालयों और सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध करानी चाहिए।
- **साझेदारी और CSR पहल**: निजी कंपनियाँ कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) के तहत सूचना साक्षरता के कार्यक्रमों में निवेश कर सकती हैं।

निष्कर्ष:

भारतीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता का विकास न केवल ज्ञान आधारित समाज के निर्माण में सहायक है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुस्तकालयों को

सूचना साक्षरता के केंद्र के रूप में विकसित करना और इस दिशा में सरकार, शैक्षणिक संस्थानों और समाज का सामूहिक प्रयास आवश्यक है। इस शोध पत्र में वर्णित लाभ, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ इस दिशा में महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करती हैं।

संदर्भ:

1. American Library Association (ALA). (1989). Presidential Committee on Information
2. Literacy: Final Report.
3. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020.
4. https://www.gramodayachitrakoot.ac.in/wp-content/uploads/2019/08/Information-Society-1-352.pdf
5. https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BLIS-101.pdf
6. Das, B. K., & Maharana, R. K. (2013). Information Literacy in Indian Academic Libraries: A Study. Library Philosophy and Practice
7. Narwade Mukesh Ramesh "Scientometric Analysis of Library and Information Studies" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-4 | Issue-4, June 2020, pp.65-70, URL: https://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd30857.pdf